न्यायसंगत होने का महत्व

नेल्ली ब्लाई की कहानी

लेखक : ऐन डोनेगन जॉनसन

न्यायसंगत होने का महत्व

नेल्ली ब्लाई की कहानी

यह एक बहुत रोचक व्यक्तित्व नेल्ली ब्लाई की कथा है। यह कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। नेल्ली ब्लाई के विषय में और ऐतिहासिक तथ्य अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

बहुत पहले की बात है, एक नौजवान महिला थी, जिसका नाम था नेल्ली ब्लाई। नेल्ली पिट्सबर्ग शहर के एक समाचार पत्र की बहुत अच्छी पत्रकार थी। वह इतनी अच्छी पत्रकार थी, कि उसने न्यूयॉर्क के सबसे प्रसिद्ध अखबार न्यूयॉर्क टाइम्स में नौकरी के लिए आवेदन करने का निश्चय किया।

लेकिन यह इतना आसान नहीं था, जितना उसने सोचा था। न्यूयॉर्क के किसी भी अख़बार के संपादक ने उससे बात करने में रुचि नहीं दिखाई, सिर्फ इसलिए क्योंकि वह एक महिला थी।

"यह बहुत अन्यायपूर्ण है!", उसने कहा। "एक महिला भी उतनी ही अच्छी पत्रकार हो सकती है, जितने कि पुरुष।" वह पार्क में एक बेंच पर बैठी सोच रही थी कि किस प्रकार इन सम्पादकों से मिला जाये। और उसी समय एक उचक्का तेज़ी से आया और उसका पर्स लेकर भाग गया।
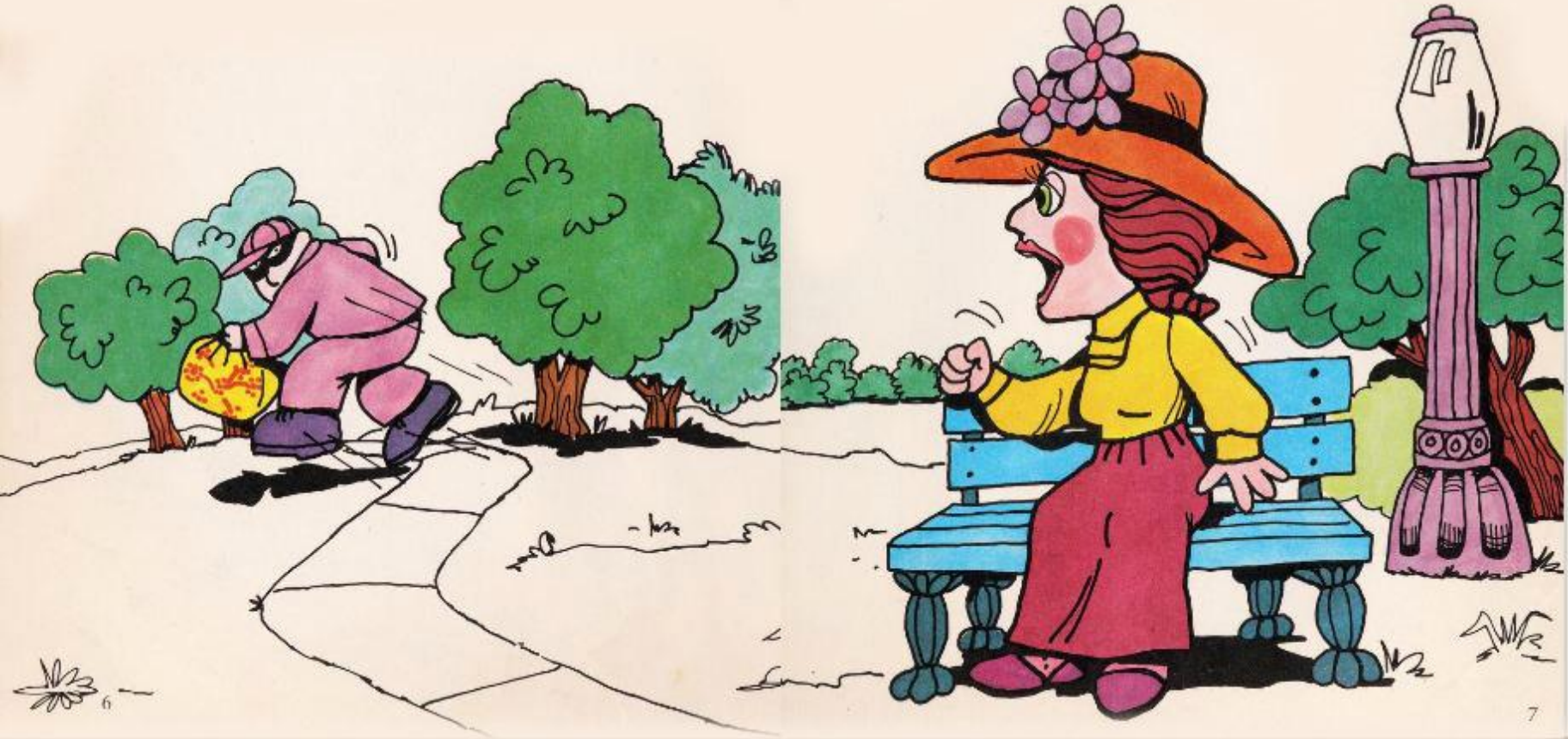
"यह लो," नेल्ली ने दुखी होकर कहा। "अब मेरे पास पैसे भी नहीं हैं। अब तो मुझे तुरंत ही कोई नौकरी खोजनी होगी।"

वह चिंतित हो सोच-विचार में खोई थी। लेकिन अंततः उसके चेहरे पर एक मुस्कान आई। "समझ आया", उसने कहा। "अब मुझे समझ आ गया है कि किस प्रकार न्यूयॉर्क वर्ल्ड के संपादक को राज़ी करना है मुझे अपने अख़बार में पत्रकार की नौकरी देने के लिए।"

जब नेल्ली अख़बार के कार्यालय पहुंची, उसने अपनी उंगली ने पहनी भाग्यशाली अंगूठी को छुआ और गोल गोल घुमाया। "इस बार मैं अवश्य ही किसी से मिल कर रहूंगी," उसने मन ही मन सोचा।

तुम्हें क्या लगता है, नेल्ली क्या करने जा रही थी?

नेल्ली उस बड़े अख़बार के दफ्तर में घुसी, और कुछ रुआब के साथ बोली, "मुझे मिस्टर काकेरिल से मिलना है।"

"संपादक, मिस्टर काकेरिल?" दरवाज़े पर खड़े गार्ड ने हंस कर कहा। "वह तो बहुत व्यस्त हैं।"

"ठीक है, लेकिन फिर भी मुझे उनसे मिलना है", नेल्ली ने कहा।

"देखो लड़की," गार्ड ने कहा। "मेरा काम है यह देखना कि कोई भी बिना इजाज़त अंदर न जाये। अब जाओ यहाँ से। मिस्टर काकेरिल आज किसी से नहीं मिलने वाले।"

"ठीक है, तो मैं इंतज़ार करूँगी," नेल्ली ने कहा। "मैं यहीं खड़ी रहूंगी। भले ही सारा दिन लग जाये, या पूरी रात, या फिर कल तक भी। मैं इंतेज़ार करती ही रहूंगी जब तक कि मिस्टर काकेरिल के पास समय न हो। लेकिन मैं उनसे मिल कर ही यहाँ से जाउंगी।"

गार्ड को यह बात बिलकुल अच्छी नहीं लगी, लेकिन उसे समझ नहीं आया कि वह क्या करे।

जल्दी ही और लोगों ने भी नेल्ली को वहां खड़े देखा, और यह भी कि वह वहां से हिलने को तैयार न थी।

"कौन है यह लड़की?" एक ने पूछा।

"यहाँ दफ्तर में इसका क्या काम ?" दूसरे ने कहा। "यह अपने घर क्यों नहीं जाती, जहाँ उसे होना चाहिए।"

नेल्ली चुपचाप खड़ी रही।

वह खड़ी रही और इंतेज़ार करती रही। एक घंटा बीत गया, और उसकी टाँगें दुखने लगीं। एक घंटा और बीत गया। नेल्ली अब काँप रही थी।

अंततः कुछ लोग आपस में वाद-विवाद करने लगे। वे चाहते थे की नेल्ली वहां से चली जाये, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो। और जब यह वाद-विवाद ज़ोरों पर था, नेल्ली चुपके से दौड़ कर संपादक के दफ्तर में घुस गई।

"यह क्या है?" मिस्टर काकेरिल ने उसे देख कर कहा। "कौन हो तुम? और यहाँ क्या कर रही हो ?"

"मेरा नाम नेल्ली ब्लाई है," वह जल्दी से बोली। "मिस्टर काकेरिल, मैं इस अख़बार के लिए पत्रकार बनना चाहती हूँ। मेरे पास अनुभव है। मैंने पिट्सबर्ग के सबसे अच्छे अख़बार के लिए लेख लिखे हैं।"

"एक महिला पत्रकार?" मिस्टर काकेरिल ज़ोर से बोले। "असंभव! हमारा अख़बार महिलाओं को पत्रकार की नौकरी नहीं देता।"

"लेकिन यह तो न्यायसंगत नहीं है," नेल्ली ने भी ऊंची आवाज़ में कहा।

फिर वह ठहरी और एक गहरी सांस लेकर बोली, "मिस्टर काकेरिल, मुझे पता है कि आपके पास बहुत से योग्य पत्रकार हैं। लेकिन मेरा आवेदन अस्वीकार करने से पहले आप मेरी बात सुन तो लें।"

फिर वह मिस्टर काकेरिल को अपनी एक साहसिक योजना के बारे में बताने लगी। जब वह बोल रही थी, अचानक उस अख़बार के मालिक महान जोसफ पुलित्ज़र चुपचाप कमरे में दाखिल हो गए। वहां खड़े-खड़े जब उन्होंने नेल्ली की बातें सुनीं, उनकी आँखे आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।

"मैं पागल होने का नाटक करूँगी," नेल्ली ने कहा। "फिर मुझे ब्लैकवेल आइलैंड पर स्थित मानसिक रोगियों के चिकित्सालय भेज दिया जायेगा।"

"ब्लैकवेल आइलैंड?" जोसफ पुलित्ज़र ने ज़ोर से कहा, "वह तो न्यूयॉर्क का सबसे भयावह स्थान है। किसी को नहीं पता कि वहां क्या-क्या होता है।"

"मैं पता लगाउंगी कि वहां क्या होता है," नेल्ली ने वादा किया, "और फिर मैं एक विस्तृत लेख लिखूंगी कि ब्लैकवेल की इस संस्था में गरीब लोगों के साथ कैसा सुलूक किया जाता है।"

"ठीक है," मिस्टर पुलित्ज़र ने कहा। "यदि तुम आइलैंड पर जा कर अख़बार के लिए एक अच्छी रिपोर्ट लिखने में सफल रहीं, तो मैं तुम्हें अवश्य नौकरी दूंगा।"

फिर क्या था, नेल्ली अपने इस अभियान पर निकल पड़ी।

पहले उसने पागल होने का नाटक करके कुछ डाक्टरों को बेवकूफ बनाया। यह उसके लिए बहुत मुश्किल नहीं था। वह अभिनय करने में माहिर थी। मुश्किलें तब शुरू हुई जब उसे एक गाड़ी में बिठा कर कुछ महिलाओं के साथ ब्लैकवैल आइलैंड को भेजा गया। जब उसने वहां की अँधेरी भयावह इमारतों को देखा, तो वह भयभीत होने लगी।

"मिस्टर पुलित्ज़र और मिस्टर काकेरिल को पता है कि मैं यहाँ हूँ," उसने सोचा। "उन्होंने कहा था कि वे मुझे यहाँ से निकाल लेंगे। लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि कब और कैसे।"
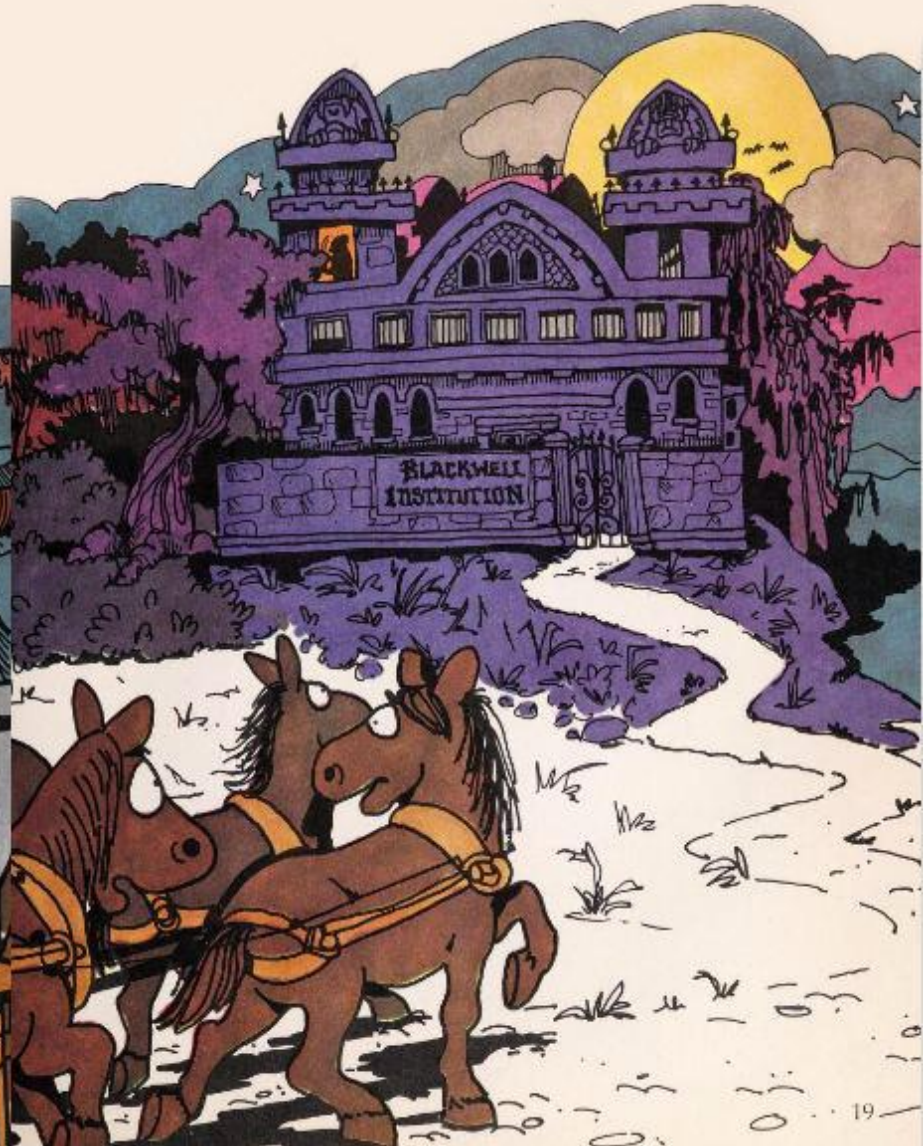
ब्लैकवेल आइलैंड के डॉक्टरों और नर्सों का कर्त्तव्य था कि वे मानसिक रोगियों की चिकित्सा करें, ताकि वे ठीक होकर अपने घर लौट सकें। "पता नहीं वे ऐसा करते भी हैं या नहीं," नेल्ली ने सोचा। "मैं पता लगाने की कोशिश करुँगी।"

इसलिए नेल्ली ने सामान्य रूप से ही व्यवहार किया। "मैं मानसिक रोगी नहीं हूँ," उसने डॉक्टर से कहा।

"अवश्य ही तुम पागल हो, वर्ना तुम्हें यहाँ क्यों लाया जाता," डॉक्टर ने कहा।

"तुम ब्लैकवेल आइलैंड पर हो," नर्स ने कहा, "और अब तुम कभी भी वापस नहीं जा सकोगी।"
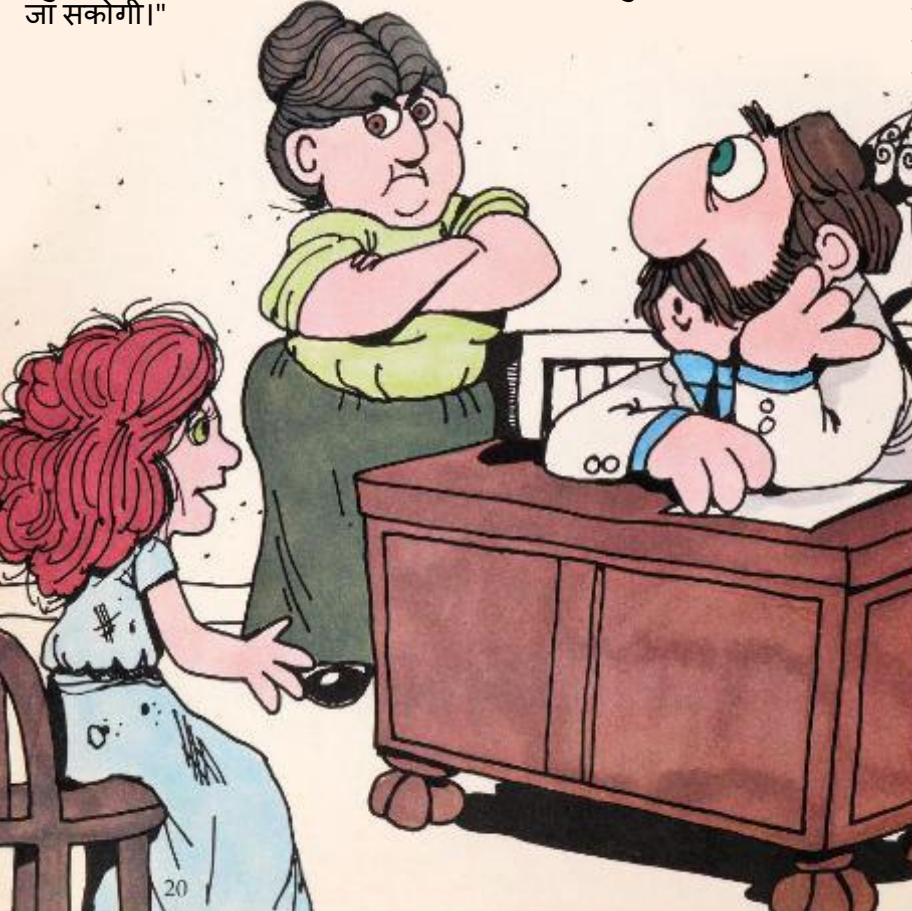
नर्स जल्दी से नेल्ली को उस बड़े से कमरे में ले गई जहाँ सारे रोगी रहते थे। वहां किसी ने भी नेल्ली की ओर ध्यान नहीं दिया। वह एक टूटे-फूटे पियानो के पास बैठ गई, और अपने आप को दिलासा देने लगी।

"लेकिन मैं इतनी बहादुर नहीं हूँ," मन ही मन उसने कहा। "मुझे डर लग रहा है। यह जगह कितनी भयावह है। काश मैं किसी से बातचीत कर पाती।"

उसी समय पियानो में से एक छोटी सी चुहिया उछल कर बाहर निकली। "अगर तुम चाहो तो मुझसे बात कर सकती हो," चूहिया ने कहा। "मेरा नाम सनी है, और मैं ज़रूर तुमसे दोस्ती करना चाहूंगी।"

नेल्ली हंसी। उसे पता था कि चूहे बात नहीं किया करते। वह केवल अपने मन में कल्पना कर रही थी कि इस अकेलेपन में उसका कोई दोस्त है। लेकिन फिर भी सनी को देख कर उसे ख़ुशी हुई।

भोजन के समय नेल्ली के साथ सनी भी खाने की मेज़ पर पहुँच गयी। लेकिन जब भोजन परोसा गया, तो दोनों की भूख गायब हो गईं।

"उफ़," चुहिया ने कहा। "यह गोश्त कितना बेकार दिखता है।"

"और डबलरोटी भी बासी है," नेल्ली ने कहा।

फिर सनी ने नर्सों की मेज़ की ओर इशारा किया। "वह देखो," वह ज़ोर से बोली, "उनके पास तो खाने की इतनी-अच्छी अच्छी चीज़ें हैं, जबकि मरीज़ों को यह बेकार खाना परोसा गया है। यह तो बिलकुल न्यायसंगत नहीं है।"

खाना खाने के बार सभी मरीज़ वापस उसी बड़े से लेकिन नीरस कमरे में चले गए।

"तुम पियानो बजाने की कोशिश करो न," सनी ने कहा। "हो सकता है संगीत सुनकर ये लोग कुछ प्रसन्नचित्त हो जाएँ।"

"मुझे बहुत अच्छे से बजाना तो नहीं आता, लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगी," नेल्ली ने कहा। संगीत से फर्क ज़रूर पड़ा। कुछ मरीज़ों के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। कुछ तो गाने भी लगे।

लेकिन यह गाना और मुस्कुराना बंद हो गया जब नर्सों ने आवाज़ लगाई, कि नहाने का समय हो गया है।

"आश्चर्य है," नेल्ली ने कहा. " हर कोई इतना परेशान क्यों है? आखिर नहाने में घबराने वाली कौन सी बात है।"

नेल्ली को जल्दी ही पता चल गया कि उसका सोचना सही नहीं था। ब्लैकवेल आइलैंड पर नहाने की प्रक्रिया वाकई डराने वाली थी। नर्सें मरीज़ों को ज़बरदस्ती बर्फ से ठन्डे पानी से भरे टब में ठेल रही थीं।
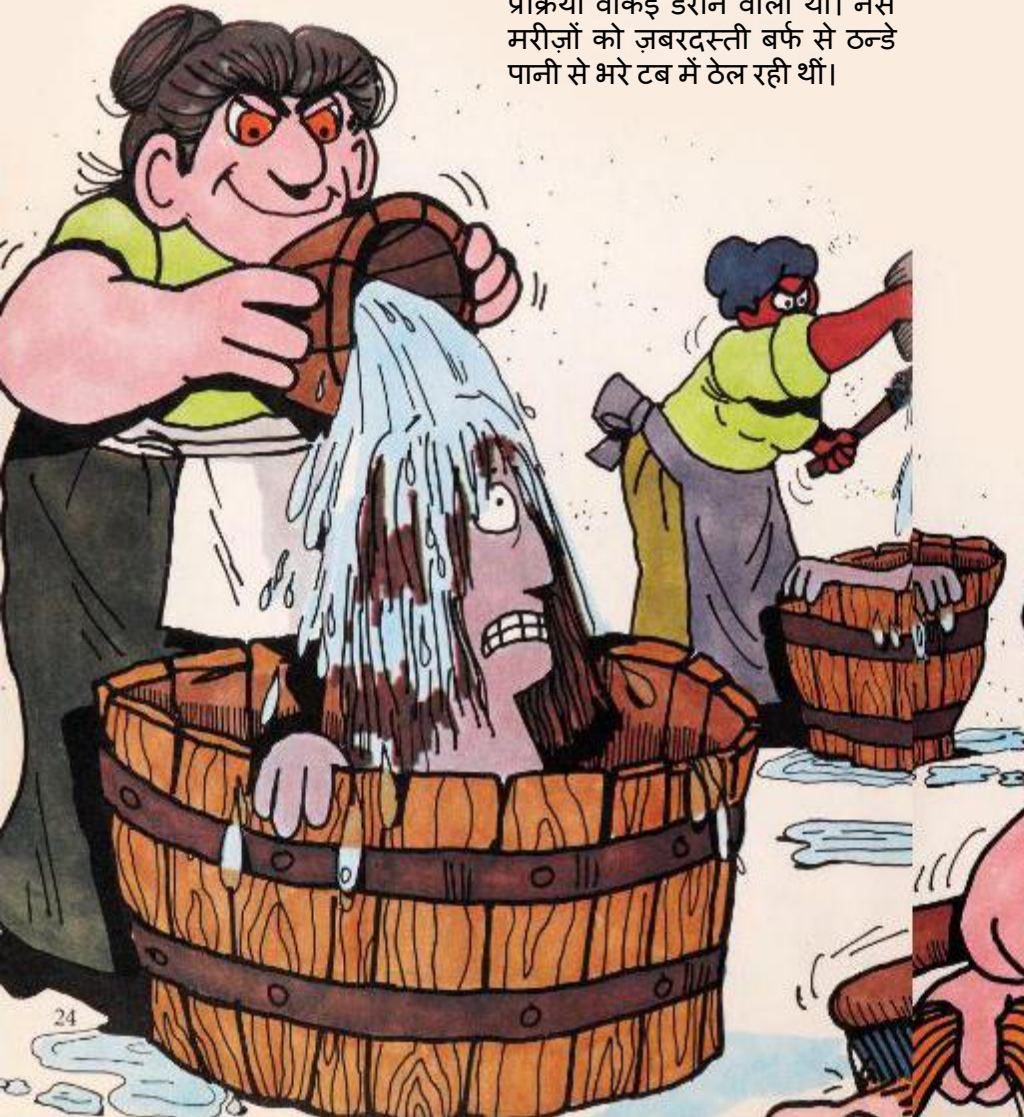
"बंद करो यह," नेल्ली ने चिल्ला कर कहा। "तुम्हारा काम है इन बेचारों की सहायता करना। इसके बजाय तुम उन्हें कष्ट दे रही हो। कितनी बर्फीली ठण्ड है यहाँ। सबको सर्दी-ज़ुकाम हो जायेगा। तुम बिलकुल उचित नहीं कर रही हो। बल्कि लगता है कि तुममें मानवता है ही नहीं।"

"यह देखो, एक उपद्रवी," एक नर्स चिल्लाई। "जानती हो तुम जैसे उपद्रवियों के साथ हम क्या करते हैं?"

"मुझे लगता है, हमें जल्दी ही पता लग जायेगा," सनी ने कहा, "लेकिन मैं वह सब देखना नहीं चाहती।"

नर्स ने नेल्ली को एक टब में ठेल दिया, और उसके सर पर बर्फीला पाने उंडेल दिया।

"हमें न्यायोचित या दयालु बनने की कोई आवश्यकता नहीं है," एक नर्स ने दबी हंसी के साथ कहा।

"किसी को कभी पता नहीं चलेगा कि हम क्या-क्या करते हैं," दूसरी बोली।

"यह सब बताने के लिए तुम कभी बाहर ही नहीं जा पाओगे," तीसरी हंस कर बोली।

"बदमाश गुंडे हो तुम सब!", चूहिया ने चिचिया कर कहा। लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।
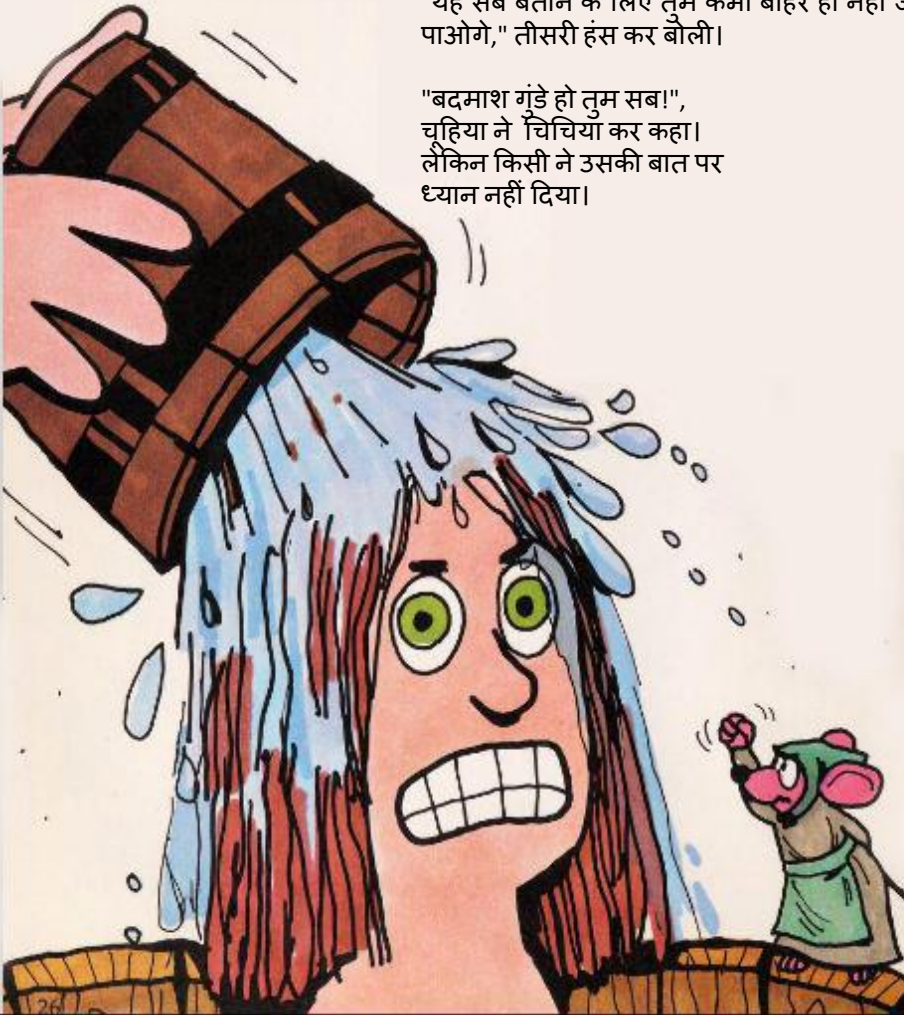
जैसे कुछ दिन बीते, नेल्ली को लगने लगा कि शायद नर्सें ठीक कह रही थीं। शायद उसे सारी ज़िन्दगी यहीं रहना पड़े। "लेकिन मैं बीमार नहीं हूँ," उसने डॉक्टर को बताया।"और कुछ अन्य लोग भी बीमार नहीं हैं।"
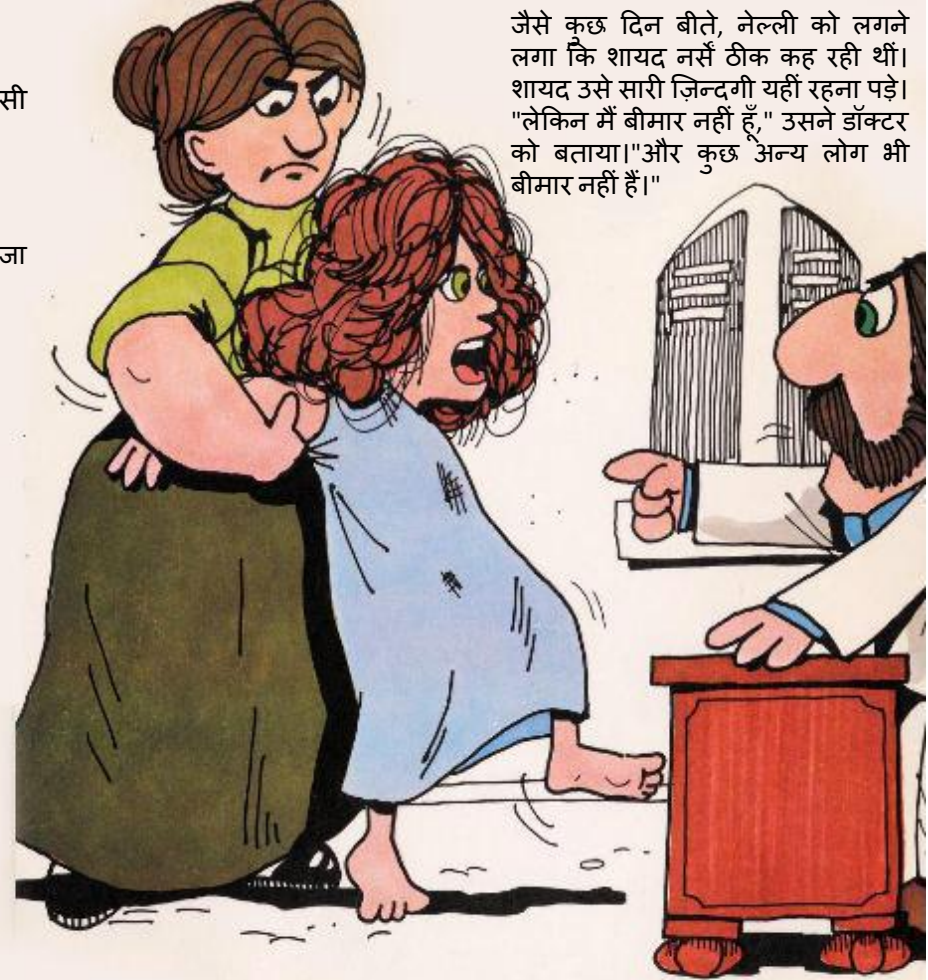
लेकिन डॉक्टर ने नर्स से कहा कि वह उसे वहां से ले जाये।

"मिस्टर पुलित्ज़र ने मुझे यहाँ से निकालने का वादा किया था," नेल्ली सोच रही थी। "कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मेरे बारे में भूल ही गए हों।"

तुम्हें क्या लगता है, क्या मिस्टर पुलित्ज़र भूल गए होंगे?

बिलकुल नहीं।

जब नेल्ली ब्लैकवेल आइलैंड पर दस दिन गुज़ार चुकी थी, वर्ल्ड अख़बार के दफ्तर से कोई व्यक्ति उसे लेने आया। "और तुम्हें आपत्ति न हो," उसकी नन्ही दोस्त चुहिया ने कहा, "तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी। मुझे यह जगह बिलकुल पसंद नहीं है।"

उस संस्था के डॉक्टर और नर्स बहुत घबराये, जब उन्हें पता चला कि नेल्ली असल में एक पत्रकार थी। और वाकई उनका घबराना एकदम वाज़िब भी था।

जब नेल्ली ने ब्लैकवेल की भयावह परिस्थितियों के बारे में अपना लेख लिखा तो जनता में क्षोभ और गुस्से की लहर दौड़ गई। "कितना अनुचित है यह," सभी ने कहा। "बीमार लोगों के साथ ऐसा बुरा बर्ताव। इस बारे में कुछ करना चाहिए।"

और वाकई कुछ किया गया। नगर अधिकारियों ने सुनिश्चित किया कि ब्लैकवेल आइलैंड के मरीज़ों को गर्म कपडे और अच्छा भोजन मिले, और अच्छे डॉक्टर और नर्स उनकी भली-भांति देखभाल करें।

ब्लैकवेल आइलैंड के लिए यह एक बहुत बड़ा बदलाव था, और यह नेल्ली ब्लाई के कारण ही संभव हो सका था।

नेल्ली द्वारा लिखी गई ब्लैकवेल आइलैंड की कहानी उसके पत्रकारिता के जीवन का सबसे कठिन कार्य था। लेकिन इसके बाद मिस्टर पुलित्ज़र को यह मानना पड़ा कि नेल्ली एक श्रेष्ट पत्रकार थी। उन्होंने उसे न्यूयॉर्क वर्ल्ड अख़बार में नौकरी दे दी। आगे चल कर नेल्ली ने बहुत से महत्वपूर्ण लेख लिखे। जब उसे लोगों के प्रति अन्यायपूर्ण बर्तांव की खोजबीन करनी होती, तो वह अक्सर भेष बदल कर काम करती थी।

"तुम बहुत प्रसिद्ध होती जा रही हो, नेल्ली ब्लाई," उसकी नन्ही दोस्त सैनी ने कहा। "जानती हो लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं? जब भी वे कहीं अन्यायपूर्ण बर्ताव होता देखते हैं जिसका खुलासा होना चाहिए, वे कहते हैं, 'नेल्ली ब्लाई को यहाँ भेजो। वह कुछ भी कर सकती है।' "

सनी बिलकुल ठीक कह रही थी। नेल्ली ने इतनी कहानियां लिखीं, और वह इतनी प्रसिद्ध हो गई, कि पत्रकारिता की दुनिया में बहुत से लोग उससे ईर्ष्या करने लगे।

"तुम लोगों को हो क्या गया है?", गुस्से से तमतमाए एक संपादक ने अपने पत्रकारों से चिल्ला कर कहा। "ऐसा क्यों हो रहा है कि नेल्ली ब्लाई, यानि महज़ एक लड़की, हर बार तुम लोगों को मात दे देती है।"
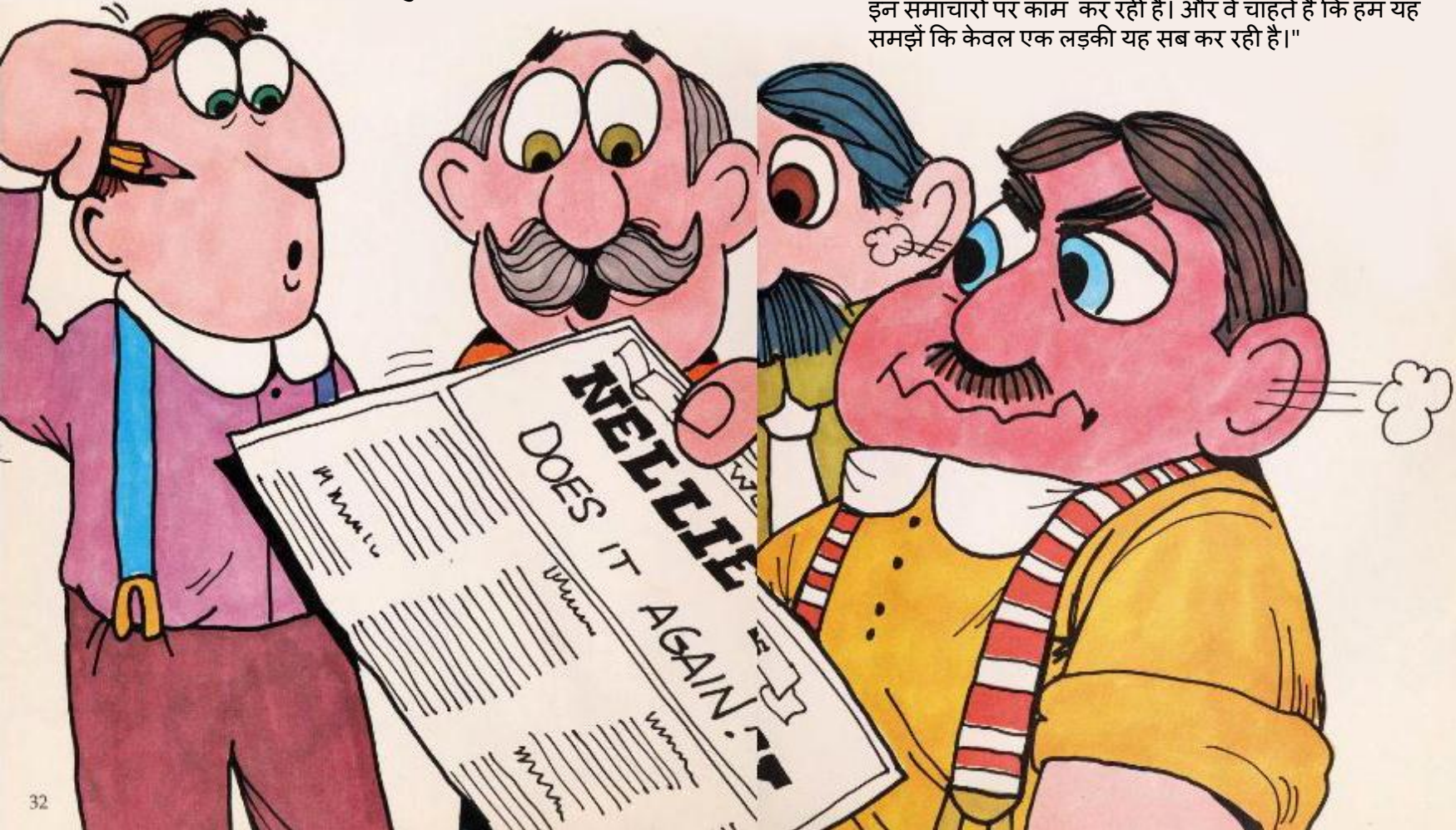
"नेल्ली ब्लाई महज़ एक लड़की नहीं है," एक पत्रकार बोला।

"असल में, नेल्ली ब्लाई किसी का नाम है ही नहीं," दूसरे पत्रकार ने कहा।

"वर्ल्ड न्यूज़ हम लोगों को बेवकूफ बना रहा है," तीसरे ने दावा किया। "उनके पास चतुर पुरुष पत्रकारों की पूरी एक टोली है, जो इन समाचारों पर काम कर रही है। और वे चाहते हैं कि हम यह समझें कि केवल एक लड़की यह सब कर रही है।"

लेकिन नेल्ली ब्लाई से भी गलतियां हो जाती थीं। एक दिन उसे पता लगा कि ब्रॉडवे के नाटकों के एक निर्माता को अपने नाटक के समूहगान के लिए कुछ लड़कियों की तलाश थी। "मैं इस काम को पाने की कोशिश करती हूँ," नेल्ली ने सोचा। "फिर मैं इस बात पर एक लेख लिखूंगी की समूहगान की लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। मुझे लगता है, इस काम में मज़ा आएगा।"

"क्या तुम्हें वाकई लगता है कि ऐसा करना ठीक रहेगा?" चुहिया सनी ने कहा। "तुम्हें पता है, समूहगान में शामिल होने के लिए नृत्य में कुशल होना ज़रूरी है?"

"क्या बुराई है इसमें?", नेल्ली ने कहा। "मैंने भी थोड़ा बहुत नृत्य तो सीखा ही है।"

और नेल्ली तुरंत इस काम को पाने के लिए निकल पड़ी।

"ठीक है, तुम कर लोगी," नाटक के मैनेजर ने नेल्ली को देख कर कहा। "यह रही तुम्हारी पोषाक। जाओ जाकर तैयार हो जाओ।"

"लेकिन, ... पहले आप मेरा काम देखना नहीं चाहेंगे?" नेल्ली ने पूछा।

"नहीं, उसके लिए समय नहीं है," मैनेजर ने कहा। "बस दूसरी लड़कियों के पीछे पीछे चली जाओ। तुम कर लोगी।" और वह चला गया।

"कमाल है," नेल्ली ने कहा। "पत्रकार की अपेक्षा समूह गान का काम पाना कहीं आसान है।"

"ऐसा इसलिए है कि लोग मानते हैं कि लड़कियों को समूहगान में ही काम करना चाहिए," चुहिया ने कहा, "या फिर किसी फैक्टरी में, या घरेलू काम-काज। जब लड़कियां पत्रकार बनना चाहती है, तो यह बात उन्हें अच्छी नहीं लगती। लेकिन फिर भी, यह काम शायद उतना आसान न हो जितना तुम समझ रही हो।"

और वाकई काम आसान नहीं था।

पहली बात तो यह कि पोषक के साथ नेल्ली को कनटोप पहन कर एक हाथ में भाला और दूसरे में ढाल पकड़नी थी, जिससे वह बड़ी अजीबोग़रीब दिखाई दे रही थी, और उसे यह पहनावा बड़ा मूर्खतापूर्ण लग रहा था।

फिर वह दूसरी लड़कियों के पीछे-पीछे मंच की ओर चली, तो उसके उसके कदम दूसरों से मेल नहीं खा रहे थे। नृत्य करते समय भी, अन्य सभी जो कुछ कर रहे थे, नेल्ली उससे बिलकुलअलग। यह देख कर दर्शक ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे।
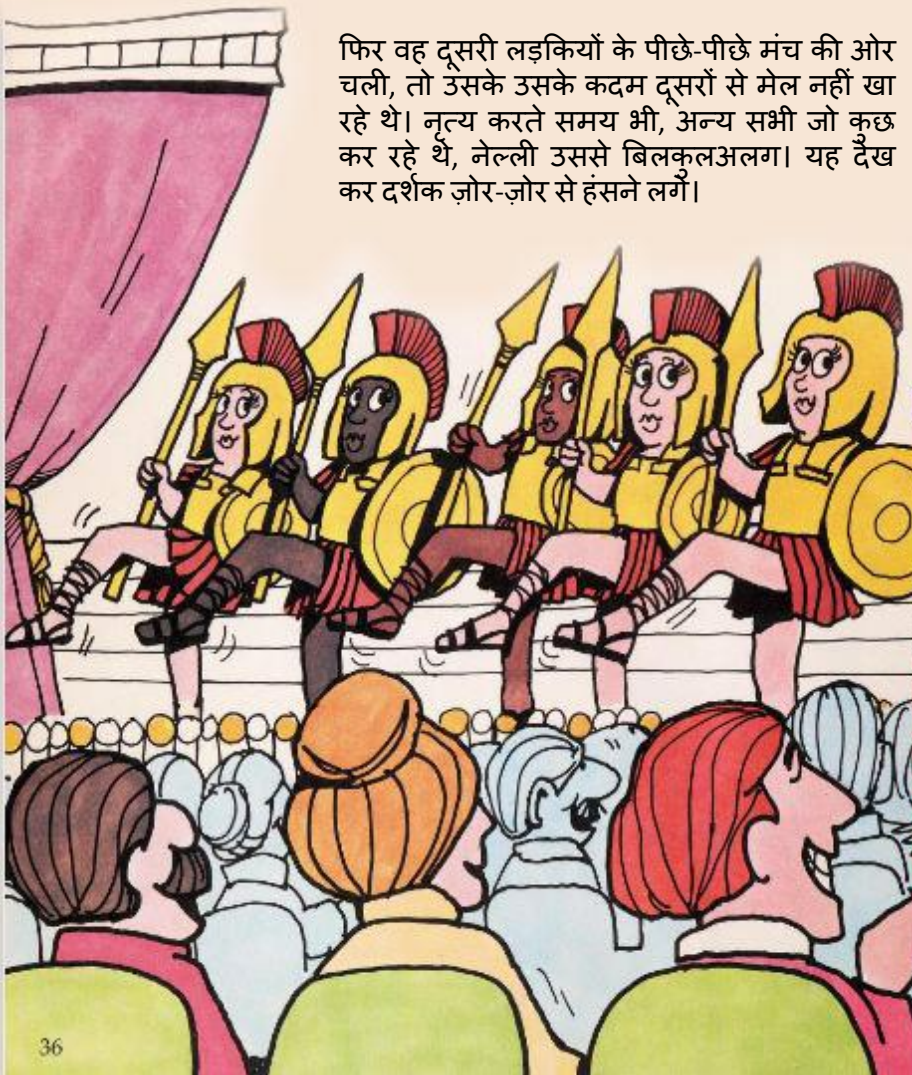
"नेल्ली," सनी ने कहा। "तुम गलत दिशा में जा रही हो। ठहरो। वापस आओ।"

"हटाओ इस लड़की तो मंच से," मैनेजर चिल्ला कर बोला।

"तुम तो आगे से अपना काम पत्रकारिता तक ही सीमित रखो", यह सब कुछ हो चुकने के बाद सनी ने कहा। "मुझे लगता है कि तुम्हारे एक दायां - एक बायां पैर नहीं, बल्कि दोनों ही पैर बाएं हैं।"

नेल्ली कुछ नहीं बोल सकी। वह बहुत लज्जित महसूस कर रही थी। लेकिन उसे पता था कि सनी ठीक कह रही थी।

नेल्ली ने दोबारा कभी मंच पर जाने की कोशिश नहीं की। लेकिन जल्दी ही उसे एक विचार आया जो उसे बड़ा ही शानदार लगा।

जूल्स वर्न की पुस्तक "अस्सी दिन में दुनिया की सैर" हाल ही में प्रकाशित हुई थी। यह एक ऐसे आदमी की कहानी थी जिसने केवल अस्सी दिनों में पूरी दुनिया का चक्कर लगा कर एक कीर्तिमान स्थापित किया था।

उन दिनों यात्रा करना आसान नहीं था। तब न तो हवाई जहाज़ होते थे, और न ही मोटर कारें। अधिकांश लोग घोड़े पर या घोडा-गाड़ी से सफर करते थे।

"वास्तव में इतनी जल्दी कोई भला कैसे पूरी दुनिया का चक्कर लगा सकता है?", सनी ने कहा।

"ओह,मुझे क्या पता," नेल्ली ने कहा।
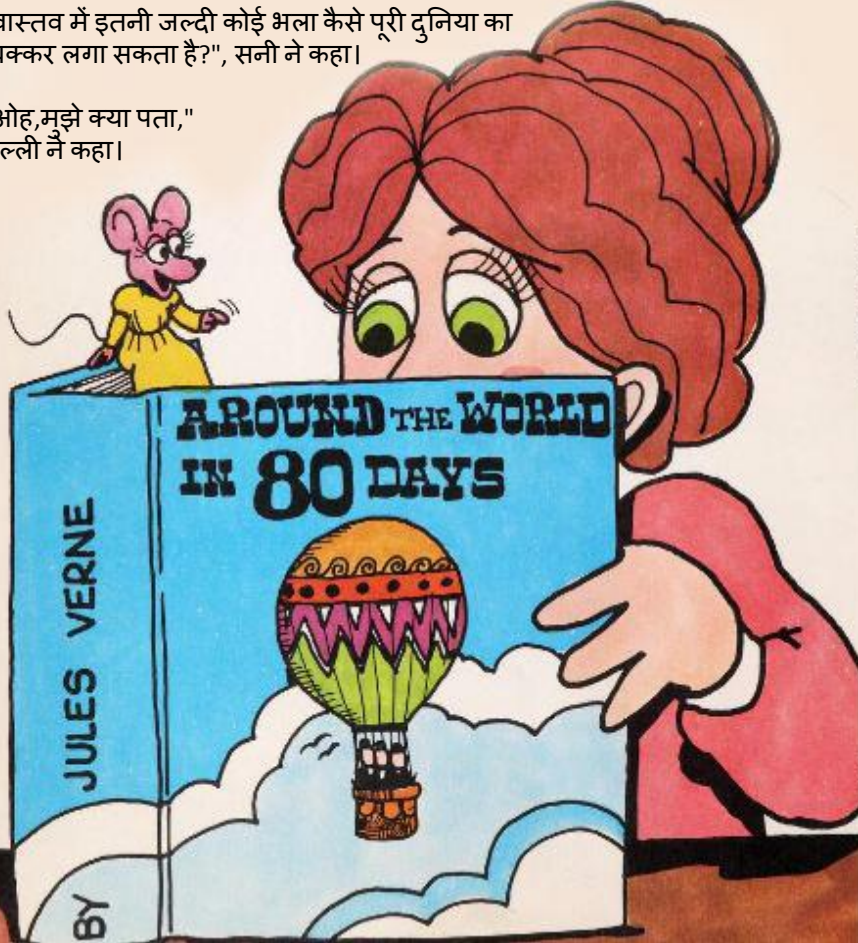
नेल्ली मिस्टर पुलित्ज़र के पास गई, और उन्हें अपनी एक योजना बताई। "मैं भी दुनिया का चक्कर लगाना चाहती हूँ," उसने कहा, "और मैं ऐसा केवल पिचहत्तर दिनों में करना चाहती हूँ।"

"असंभव !" मिस्टर पुलित्ज़र बोले। "इतने कम समय में यह नहीं किया जा सकता। और फिर तुम एक लड़की हो, और लड़कियां अकेले यात्रा बिलकुल नहीं करतीं।"

"यह तो न्यायसंगत नहीं है !", नेल्ली ने विरोध के स्वर में कहा। "पुरुष तो हमेशा ही अकेले यात्रा करते हैं। तो एक महिला वही काम क्यों नहीं कर सकती ? मुझे पता है, मैं यह कर सकती हूँ। और ज़रा सोचिये, इस यात्रा से मैं अपने अख़बार के लिए कितने रोमांचकारी लेख लिख पाऊँगी।"

मिस्टर पुलित्ज़र इस बारे में सोचने लगे, और आखिरकार उन्होंने हामी भर दी। "हाँ, यह बहुत रोमांचकारी होगा, शायद हमारे समय की सबसे अधिक रोमांचकारी कहानी। ठीक है, नेल्ली, तुम जाने की तैयारी करो।"

जब दूसरे पत्रकारों ने नेल्ली की यात्रा के बारे में सुना तो वे ईर्ष्या से बेहाल हो गए। लेकिन उन्हें यह भी विश्वास था कि नेल्ली मात्र पिचहत्तर दिनों में यह यात्रा हरगिज़ पूरी नहीं कर पायेगी।

"मिस्टर पुलित्ज़र को किसी पुरुष को भेजना चाहिए था," एक पत्रकार ने कहा। "औरतें तो ढेरों सूटकेस भर कर सामान ले जाती हैं। इस कारण उनकी यात्रा धीमी पड़ जाती है।"

लेकिन नेल्ली ने अपने सामान में केवल दो पोशाक और एक कोट रखा, और एक छोटा सा सूटकेस लेकर अपना जहाज़ पकड़ने बंदरगाह पहुँच गई।

AUGUSTA VICTORIA
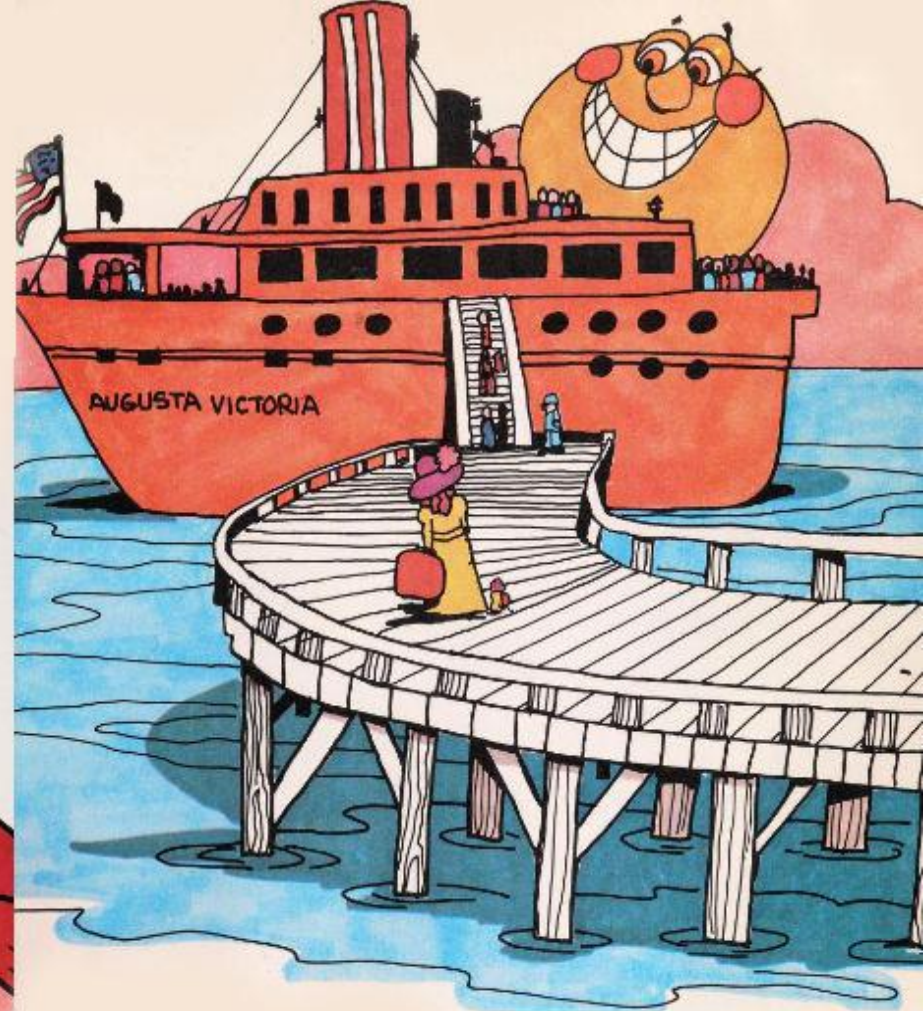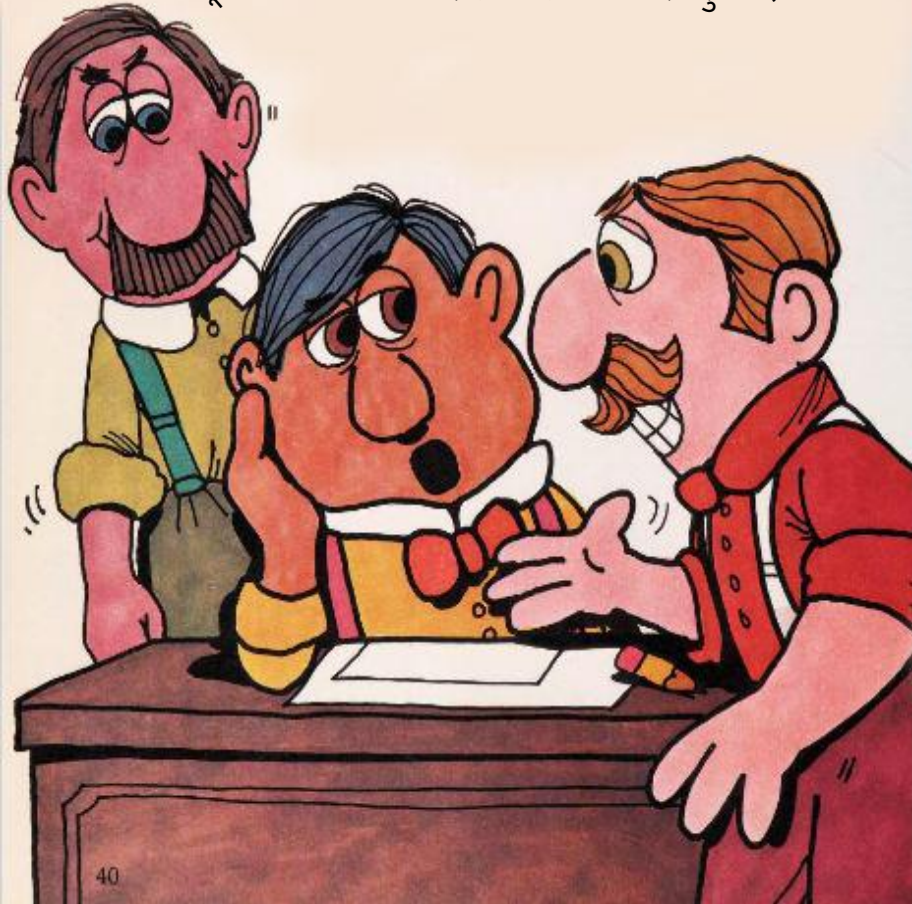
"तुम्हें डर नहीं लग रहा इस तरह सफर करने में?" एक आदमी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा। "बिना किसी को साथ लिए, जो तुम्हारी सुरक्षा कर सके?"

नेल्ली वास्तव में थोड़ा डरी हुई थी, क्योंकि उसने लोगों से जहाज़ों के डूब जाने, समुद्री लुटेरों द्वारा लूटे जाने, या यात्रियों के अपहरण होने की कहानियां सुन रखी थीं। लेकिन उसने बिलकुल जाहिर नहीं होने दिया कि वह डरी हुई है। वह निडर होकर अपनी काल्पनिक सहेली चुहिया सनी के साथ जहाज़ पर सवार हो गई।

समुदी यात्रा ऊँची-ऊँची लहरों और तेज़ हवाओं के कारण काफी कठिनाइयों भरी थी। बहुत से यात्री समुद्री यात्रा में होने वाली बीमारी से पीड़ित हो गए। जहाज़ जब इंग्लैंड पहुंचा, तो नेल्ली और सनी सॉउथम्पटन के बंदरगाह पर उतर कर बहुत प्रसन्न हुए।

अब तक नेल्ली ब्लाई और उसकी इस अद्भुत यात्रा का समाचार लोग विश्व भर में पढ़ रहे थे। वर्ल्ड अख़बार की लंदन शाखा का एक व्यक्ति नेल्ली से बंदरगाह पर मिला। वह उसके लिए एक टेलीग्राम लेकर आया था।

"अरे, यह तो जूल्स वर्न ने भेजा है," नेल्ली ने कहा। "वह चाहते हैं कि मैं फ्रांस में उनके घर जाकर उनसे मिलूं।"
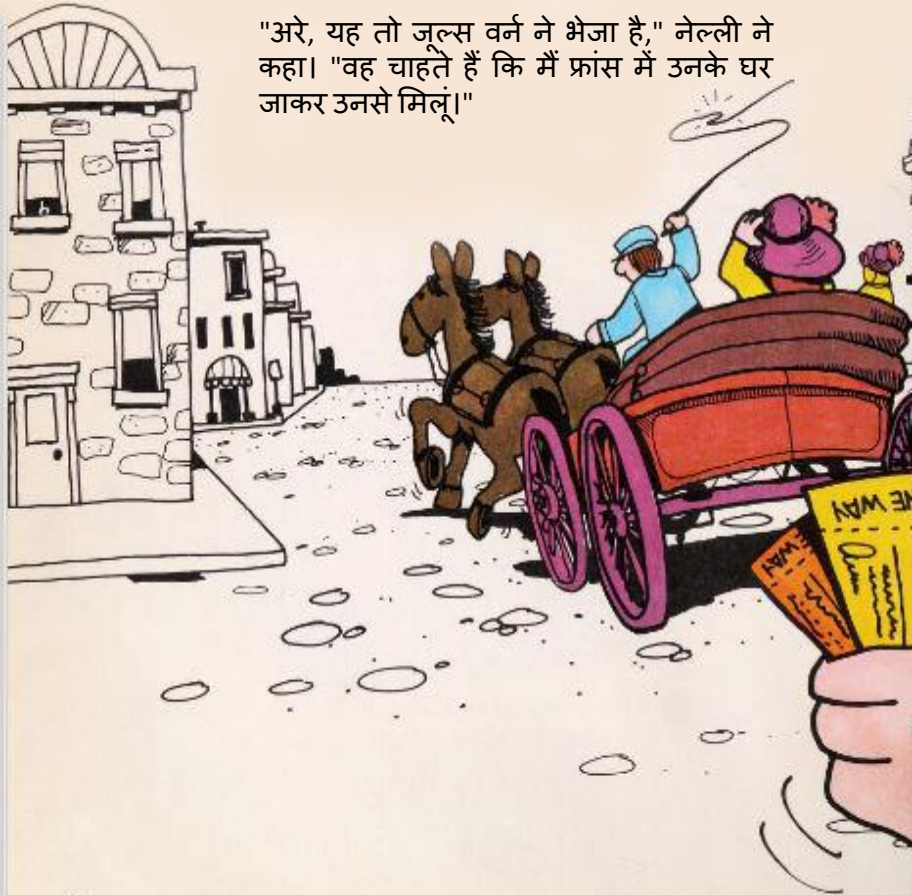
"लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकतीं!" उस व्यक्ति ने उसे चेताया। "कल ही तुम्हें इटली का जहाज़ पकड़ना होगा। ये रहे तुम्हारे टिकट।"

"लेकिन मैं मिस्टर वर्न को कैसे मना कर सकती हूँ!" नेल्ली ने आतुर होकर कहा। "मुझे मालूम है कि उनसे जाकर मिलने में समय लगेगा। लेकिन मुझे भरोसा है कि मैं इसकी भरपाई कर लूंगी। मैं यहाँ से फ्रांस के लिया नौका लूंगी, और वहां से रेल से इटली चली जाउंगी।"

यह कह कर नेल्ली सनी के साथ एक घोड़ागाड़ी पर सवार हुई, और झटपट वहां से चलती बनी।
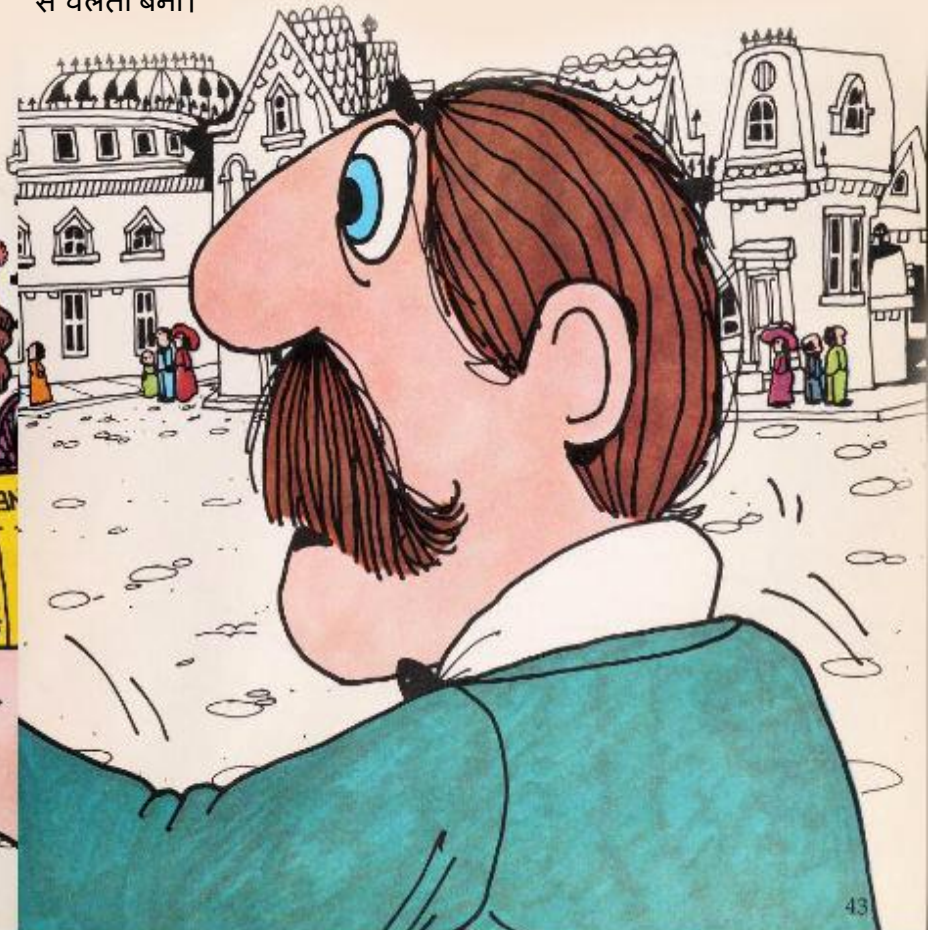
नेल्ली जब फ्रांस में जूल्स वर्न के घर पहुंची तो वे उससे मिल कर बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन उन्हें थोड़ी चिंता भी हुई। "तुम सिर्फ मुझसे मिलने के लिए इतनी दूर आईं?" उन्होंने थोड़े आश्चर्य से कहा।

"हाँ, बिलकुल," नेल्ली बड़ी प्रसन्न होकर बोली, "आखिर आपने अगर वह पुस्तक न लिखी होती, तो मैं आज अस्सी दिन से भी कम समय में संसार की यात्रा करने कैसे जा रही होती?"

"तुमने ठीक कहा," सनी बोली, "लेकिन अगर हमारी इटली की ट्रेन छूट गई, तो शायद हम दुनिया का चक्कर लगा ही न पाएं।"

नेल्ली की ट्रेन छूटी नहीं। "लेकिन कितनी धीमी है यह ट्रेन," उसने सनी से कहा, जब वे आधे रास्ते में थे। "हम लगभग दो घंटे पीछे चल रहे हैं। लगता है हम जापान जाने वाला जहाज़ नहीं पकड़ पाएंगे।"

"हे भगवान!", सनी ने ज़ोर से कहा। "अब भला तुम मिस्टर पुलित्ज़र के सामने क्या मुँह लेकर जाओगी?"

जब सनी ने ऐसा कहा तो नेल्ली को बिलकुल अच्छा नहीं लगा। वह जानती थी कि मिस्टर पुलित्ज़र उस पर भरोसा करते हैं, और सारे समाचार पत्र उसकी यात्रा की पल-पल की खबर रख रहे थे। "शायद मुझे मिस्टर वर्न से मिलने के लिए इतना ज़िद्दी नहीं होना चाहिए था," उसने कहा।

जब ट्रेन इटली में अपने गंतव्य पर पहुंची, नेल्ली ने बंदरगाह जाने के लिए एक गाडी किराये पर ली। "लेकिन शायद वहां जाने का अब कोई फायदा नहीं," उसने चुहिया से कहा। "देखो कितनी देर हो चुकी है। मुझे लगता है ज़रूर वह जहाज़ जा चुका होगा।"

निराश और दुःखी होकर नेल्ली गाड़ी में कंधे झुकाये और अपना चेहरा हाथों से छुपा कर बैठ गई।

लेकिन तभी सनी उत्तेजित स्वर से बोली, "नेल्ली, देखो!"

नेल्ली ने मुँह उठा कर आँखें खोलीं। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। जो जहाज़ उन्हें लेना था,वह अभी बंदरगाह पर ही खड़ा था।

"हिप हिप हुर्रे!" नेल्ली चीख कर बोली, और गाड़ी से बाहर कूद पड़ी। ख़ुशी के मारे उसने मुट्ठी-भर पैसे गाड़ीवान को थमा दिए। फिर वह पूरी रफ़्तार से सरपट जहाज़ की ओर दौड़ पड़ी।

नेल्ली को यह पता नहीं था, लेकिन जिस ट्रेन से वह फ्रांस से आई थी, उसी ट्रेन से कुछ महत्वपूर्ण डाक भी आई थी, जिसे उसी जहाज़ से भेजा जाना था। इसलिए जहाज़ को ट्रेन का इंतज़ार करना पड़ा।

जहाज़ इटली के तट से पूर्व दिशा में सुएज़ नहर और लाल सागर की ओर बढ़ चला। रास्ते भर नेल्ली अपनी यात्रा से सम्बंधित लेख लिखती रही, उन अजनबी देशों के बारे में, जो नेल्ली ने देखे, जहाँ लोगों की वेश-भूषा और बोल-चाल उसके अपने देश से बिलकुल अलग थी।

नेल्ली बहुत खुश थी। उसका जहाज़ लाल सागर से निकल कर हिन्द महासागर की ओर बढ़ चला था, और उसका गंतव्य था श्रीलंका। लेकिन फिर एक भयंकर तूफ़ान ने जहाज़ की रफ़्तार को धीमा कर दिया। और जब नेल्ली श्रीलंका पहुंची, वह अपने नियत समय से पिछड़ गई थी।

"हमें फिर खोये समय की भरपाई करनी होगी," चुहिया ने उसे चेताया।

"मुझे पता है। किसी न किसी तरह हम यह कर ही लेंगे," नेल्ली ने कहा। और फिर वे श्रीलंका से सिंगापुर के लिए रवाना हो गए।
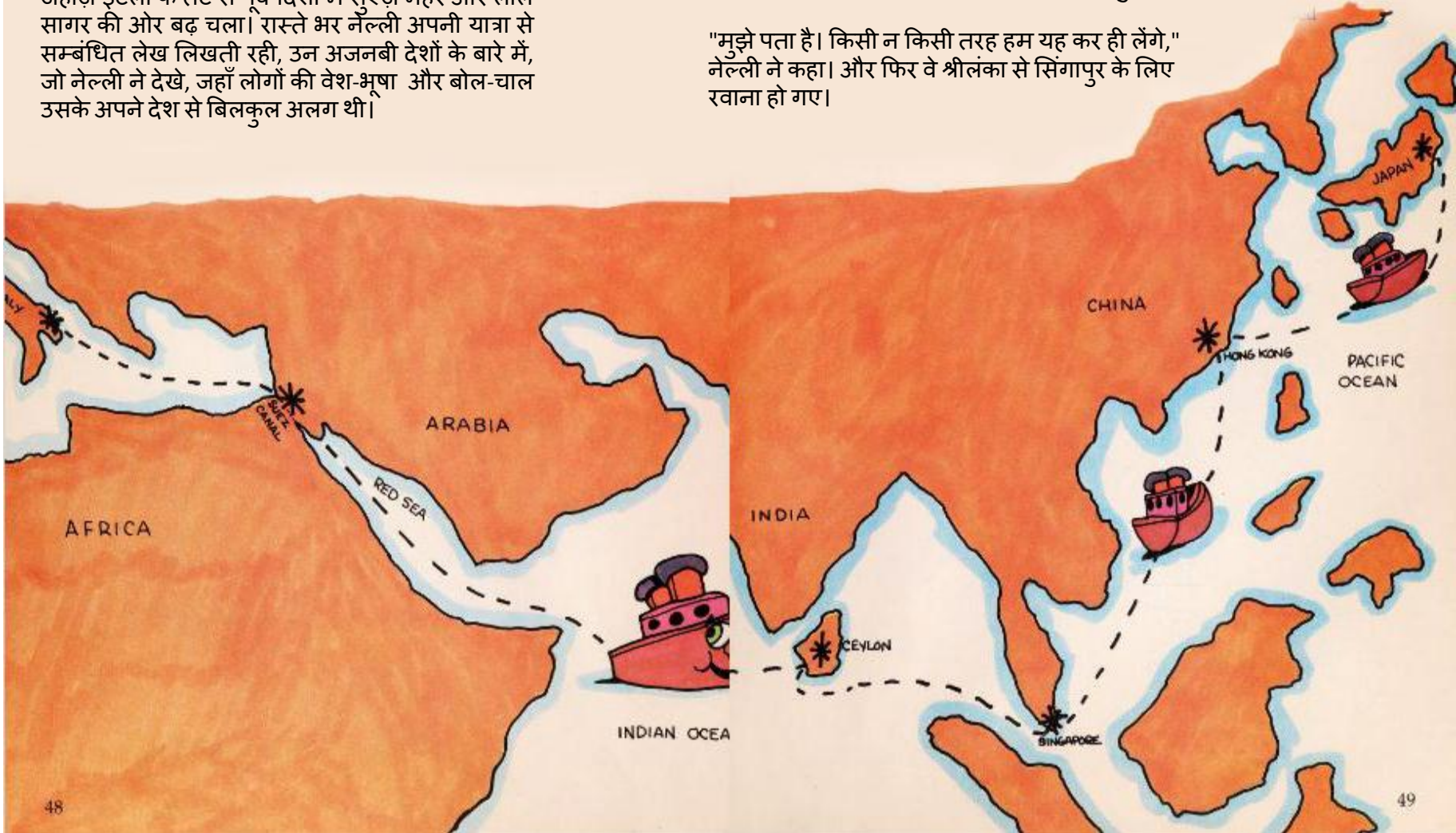
जब वह सिंगापुर पहुंची, नेल्ली धरती की परिक्रमा का आधा रास्ता पार कर चुकी थी। उसने सिंगापुर से एक बन्दर खरीद लिया। "अगर मुझे घर पहुँचने में देरी भी हो गई," वह बोली, "यह बन्दर इस बार का सबूत होगा कि मैं इस अनजान देश में आई थी।"

चुहिया सनी यह सुन कर हंसी। "इस यात्रा के बाद लोग यह नहीं कह सकेंगे कि महिलाएं कुछ बड़ा नहीं कर सकतीं," उसने भविष्यवाणी की। "शायद फिर महिलाओं के प्रति लोगों के अन्यायपूर्ण रवैये में कुछ सुधार आएगा।"

सिंगापुर से चल कर नेल्ली योकोहामा, जापान को पहुंची। वहां से अमेरिका के लिए रवाना होते समय सैकड़ों लोग उसे और उसके बन्दर को विदा करने के लिए बंदरगाह आये।

"वे सभी तुम्हारा उत्साह बढ़ा रहे हैं," चुहिया ने कहा। "उन्हें उम्मीद है कि तुम इतने कम समय में विश्व यात्रा करके एक नया कीर्तिमान स्थापित करोगी।"

"उम्मीद तो मैं भी यही करती हूँ, लेकिन हम समय से पीछे चल रहे हैं," नेल्ली ने कहा।
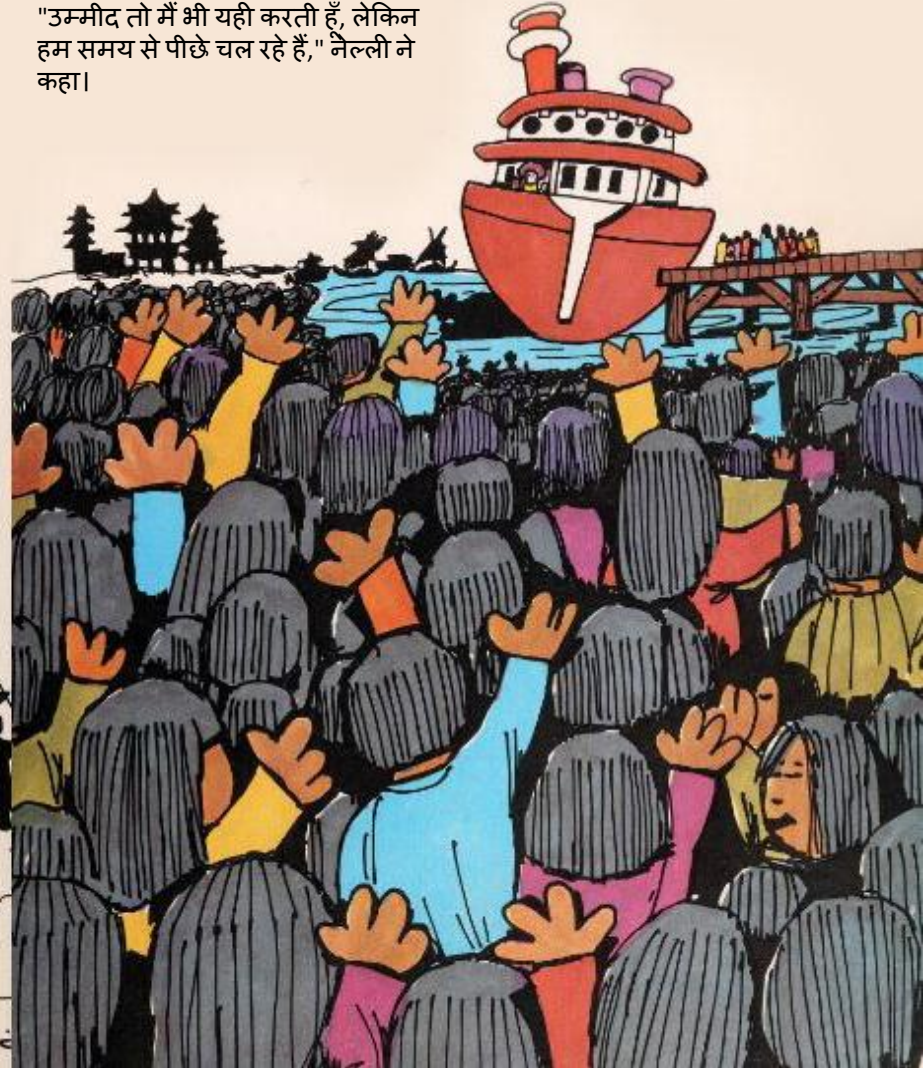
नेल्ली की यात्रा के इस आखिरी दौर के तीसरे दिन अचानक नई परेशानियां शुरू हो गईं। एक ज़बरदस्त तूफ़ान आया, और जहाज़ लहरों पर हिचकोले खाने लगा। पानी की ऊंची-ऊंची लहरें जहाज़ के ऊपर अपना सर पटक रही थीं, और तेज़ हवाओं ने उसे अपनी नियत दिशा से दूर खदेड़ दिया। सभी यात्री बुरी तरह घबराये हुए थे, और यहाँ तक कि नाविक भी आशंकित थे।

"तुम्हारा यह बन्दर अपशकुनी है," एक नाविक ने नेल्ली से कहा। " सबको पता है कि एक बन्दर को जहाज़ पर लाने का मतलब है बदकिस्मती को दावत देना। तुम्हें इसे समुद्र में फेंकना होगा। तभी जाकर यह तूफ़ान थमेगा।"

"यह तो बहुत अन्यायपूर्ण बात है!", नेल्ली ने कहा। "और मूर्खतापूर्ण भी। भला एक बन्दर इस तूफ़ान का कारण कैसे हो सकता है?"

तुम्हें क्या लगता है? क्या हुआ होगा उस बेचारे बन्दर के साथ?

नेल्ली तुरंत जहाज़ के कप्तान के पास पहुंची।

"मैं अपने बन्दर को जहाज़ से नीचे हरगिज़ नहीं फेकूँगी," उसने कहा। "मुझसे ऐसा करने की आशा रखना बिलकुल न्यायसंगत नहीं है। इस बन्दर का तूफ़ान से कोई लेना-देना नहीं है।"

सौभाग्य से कप्तान अंधविश्वासी नहीं था। "बिलकुल ठीक, तुमसे अपने बन्दर को फेंकने की आशा करना एकदम न्यायसंगत नहीं है," उसने कहा। "बन्दर तुम्हारे पास ही रहेगा, लेकिन इसे छिपा कर रखो, जिससे कि नाविक आशंकित न हों।"

दो सप्ताह की मुश्किलों भरी यात्रा के बाद जाकर नेल्ली के जहाज़ को धरती का किनारा दिखाई दिया। "आख़िरकार हम सान-फ्रांसिस्को की खाड़ी को पहुँच ही गए," नेल्ली ने उत्साहित होकर कहा।

"और मैं देख रहा हूँ कि लोगों की भीड़ तुम्हें देखने के लिए वहां इंतज़ार कर रही है," कप्तान ने कहा। "लेकिन मुझे अफ़सोस है कि मैं तुम्हें जहाज़ से उतरने की इजाज़त नहीं दे सकता। सुना जा रहा है कि इस जहाज़ पर किसी को चेचक की बीमारी हुई है, और स्वास्थ्य अधिकारी यह सुनिश्चित करना चाहते हैं की जहाज़ से उतरने वाले सभी लोग पूरी तरह स्वस्थ हों।"

"लेकिन मेरा उतरना बहुत ज़रूरी है," नेल्ली ने ऊँची आवाज़ में कहा। "मैं बिलकुल भी समय नष्ट नहीं कर सकती। ज़रूरी हुआ तो मैं समुद्र में कूद जाउंगी और तैर कर चली जाउंगी।"

तुम्हें क्या लगता है, क्या नेल्ली को वाकई समुद्र में कूदना पड़ा होगा?

कप्तान को लगा कि शायद कहीं वह वाकई ऐसा न कर बैठे। इसलिए उसने उसे जहाज़ से उतारने का एक और रास्ता निकाला। उसने नेल्ली, उसके बन्दर और चुहिया सनी तो एक छोटी नौका में बिठा कर सान फ्रान्सिक्सो बंदरगाह को रवाना कर दिया।

"वहां हमारे स्वास्थ्य की जाँच के लिए एक डॉक्टर इंतज़ार कर रहा है," नेल्ली ने कहा। "अब हमारा अधिक समय बर्बाद नहीं होगा।"

जब नेल्ली तट पर उतरी तो सैकड़ों लोगों की भीड़ ऊँची आवाज़ में उसकी जयकार कर रही थी। उसके स्वागत में बैंड-बाजा बजाया जा रहा था, और लोग नाच-गा रहे थे। "पिछले अड़सठ दिनों से मैं संसार भर में दौड़ती फिर रही हूँ, और अब जाकर मैं वापस अमेरिका पहुँच पाई हूँ," नेल्ली ने खुश हो कर कहा। "घर से अच्छी और कोई जगह नहीं है।" फिर वह एक गाड़ी में चढ़ गई, जो तेज़ी से उसे रेलवे स्टेशन को ले गई।
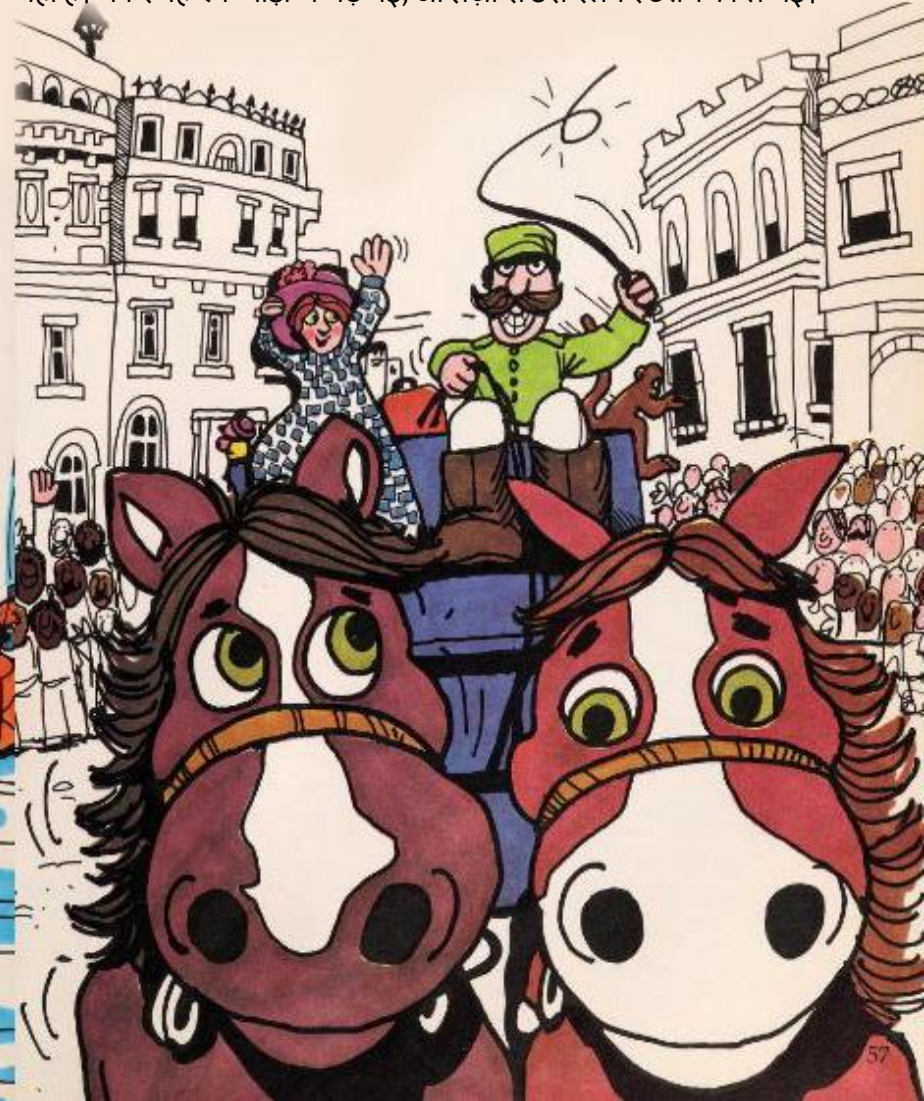
लेकिन समय के साथ नेल्ली की दौड़ अभी समाप्त नहीं हुई थी। अभी उसे पूरा अमेरिका पार करके पूर्वी तट पर पहुंचना था, जहाँ से उसकी यात्रा शुरू हुई थी।

जिस ख़ास रेलगाड़ी से वह जा रही थी उसे देखने के लिए हर समुदाय के लोग, रेड-इंडियन, किसान, और खेतिहर लोग, मीलों दूर से चल चल कर आये। जहाँ जहाँ उसकी ट्रेन रुकती, लोगों की भीड़ जुट जाती, जो उसकी जयकार के नारे लगाते, और उसे और सिंगापुर से लाये उसके बन्दर को बड़ी चाव से निहारते।
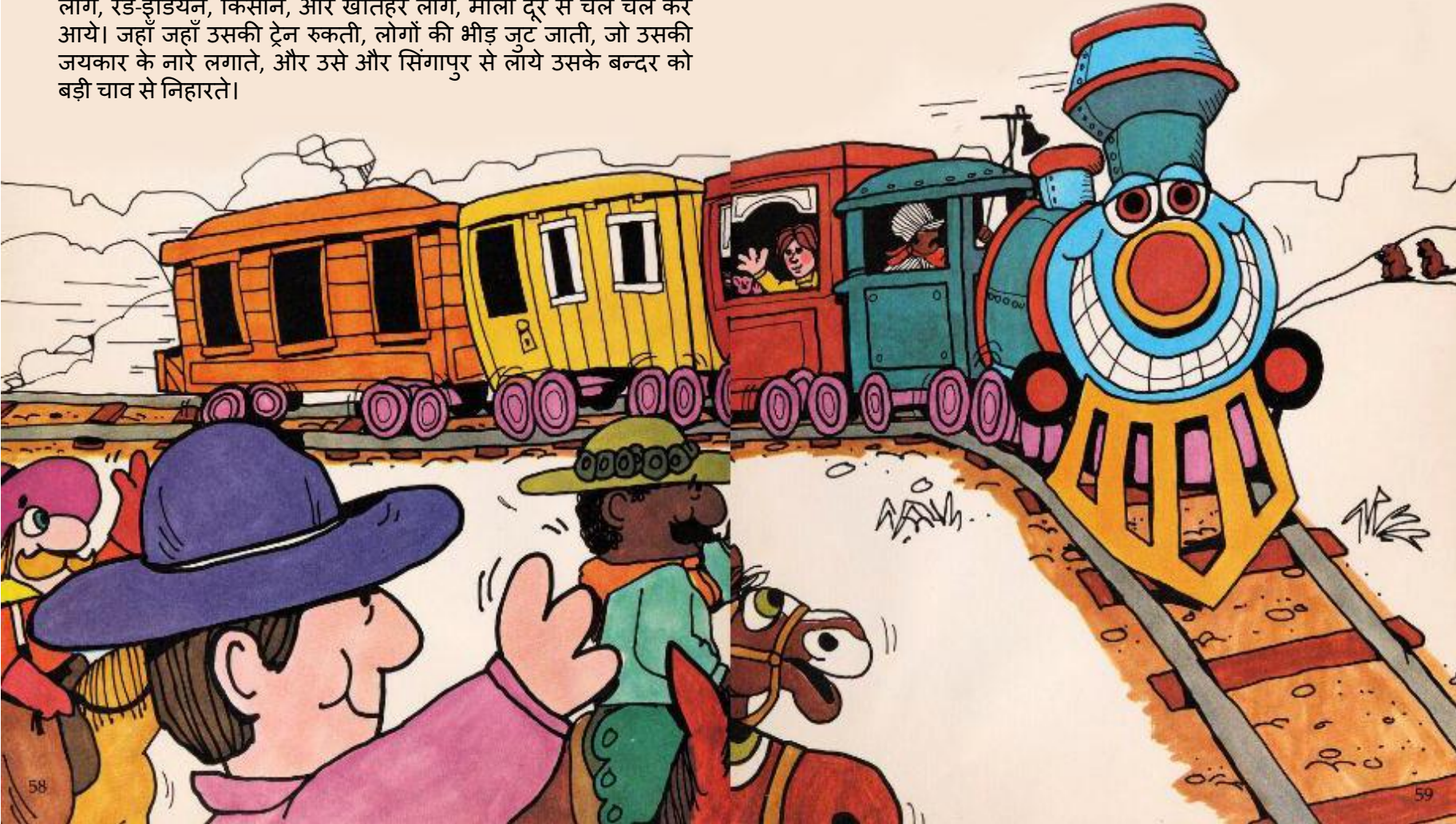
जब वह घर वापस पहुंची तो हज़ारों लोग वहां उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे। "नेल्ली जीत गई। उसने कमाल कर दिखाया," वे उत्साह से चिल्ला रहे थे। "नेल्ली ब्लाई ने सिर्फ बहत्तर दिनों में पूरी दुनिया का चक्कर लगाया है।"

नेल्ली की नन्ही सहेली चुहिया भी प्रसन्नता से हंस रही थी। "उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होगा कि तुम यह कर पाओगी," उसने कहा। "उन्हें लगता था कि तुम शायद हार मान लोगी, क्योंकि आखिर तुम एक लड़की हो।"

भीड़ की नारेबाजी से नेल्ली बहुत उत्साहित और उत्तेजित थी। लेकिन उसे किसी खास व्यक्ति से मिलने की बहुत जल्दी थी।

जानते हो न वह व्यक्ति कौन था?
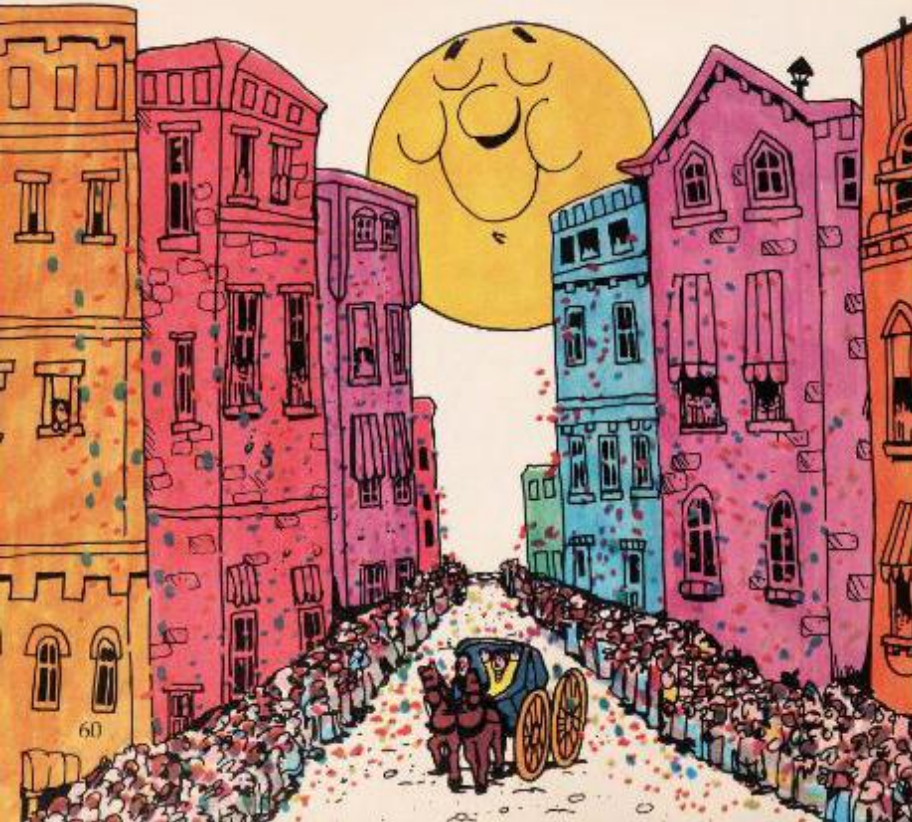
निश्चय ही, वह थे मिस्टर पुलित्ज़र।

"मुझे तुम पर गर्व है," मिस्टर पुलित्ज़र ने कहा। "न केवल तुम समय के साथ अपने दौड़ में विजयी हुई हो, तुमने संसार भर के लोगों को यह दिखाया है कि एक महिला जहाँ कहीं भी जाये, अपना खयाल रख सकती है।"

"घर वापस लौटने पर तुम्हारा स्वागत है, नेल्ली ब्लाई!"

नेल्ली बहुत खुश थी, और सिर्फ इसलिए नहीं कि वह समय के साथ दौड़ में जीती थी। वह खुश थी क्योंकि वह जानती थी कि उसकी इस उपलब्धि के कारण शायद अब संसार में बहुत सी महिलाओं को अधिक न्यायसंगत व्यवहार मिल सकेगा।

तनिक विचार करो। पूछो अपने आप से, कि तुम दूसरों के साथ कितना न्यायसंगत बर्ताव करते हो। क्या तुम यह मानते हो कि न्यायसंगत होना महत्वपूर्ण है? क्या तुम्हें नहीं लगता कि ऐसा करने से तुम्हारा जीवन अधिक सुखी बन सकता है?

नेल्ली ब्लाई
(1867 - 1922)

ऐतिहासिक तथ्य

नेल्ली ब्लाई का असली नाम एलिज़ाबेथ कॉकरेन था, और उसका जन्म पेनसिलवेनिया राज्य के एक छोटे शहर में हुआ था। वह एक दुबली-पतली लड़की थी, और इस कारण उसके हट्टे-कट्टे भाई बचपन में उसका मज़ाक उड़ाते थे। उसने छोटी उम्र में ही निर्भीक बनना सीख लिया था। जो कुछ उसके भाई करते, वह उनसे बेहतर करने की कोशिश करती।

जब एलिज़ाबेथ के पिता की मृत्यु हो गई, तो वह और उसकी माँ पिट्सबर्ग चले आये। १८८५ में जब वह मुश्किल से २० साल की थी, और एक लेखक बनना चाहती थी, एलिज़ाबेथ ने 'पिट्सबर्ग डिस्पैच' अख़बार में एक लेख पढ़ा, जिसका शीर्षक था, "कौन से काम लड़कियों के लिए उपयुक्त हैं"। उस समय महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था, और रोज़गार के अवसर भी उनके लिए बहुत कम थे। इस लेख में महिलाओं को वोट का अधिकार देने या उनके घर से बाहर काम-काज करने का घोर विरोध किया गया था। इस पर एलिज़ाबेथ को बहुत गुस्सा आया, और उसने अख़बार के संपादक को बड़ी चुभती हुए भाषा में उलाहना देते हुए एक पत्र लिखा।

जॉर्ज मैडेन, जिसने वह लेख लिखा था, इस गुमनाम पत्र को पढ़ कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने अख़बार में विज्ञापन छापा कि पत्र का लेखक उससे आकर मिले। मैडेन उस पत्र के लेखक को अपने अख़बार के लिए पत्रकार नियुक्त करना चाहता था। लेकिन जब उसे पता चला कि उसे लिखने वाली एलिज़ाबेथ, यानि एक लड़की थी, तो लगभग उसने अपना निर्णय बदल ही दिया था। लेकिन फिर भी, बहुत सोच विचार करने के बाद, आखिर उसने एलिज़ाबेथ को नौकरी पर रख लिया। लेकिन एलिज़ाबेथ जो लेख लिखती थी, उन पर नाम उसका नहीं होता था। उसे किसी कल्पित नाम का प्रयोग करना था, इसलिए उसने "नेल्ली ब्लाई" नाम चुना जिसे स्टीफेन फॉस्टर द्वारा गाये एक लोकप्रिय गीत से लिया गया था।

नेल्ली अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर सामाजिक विषमताओं पर लेख लिखना चाहती थी। वह पिट्सबर्ग की झोपड़पट्टियों, कारखानों, अस्पतालों, यतीमख़ानों और जेलों में गई। और वहां उसने लोगों के रहने और काम करने की दयनीय परिस्थितियों को देखा और उनके बारे में लिखा। सच्चाई को प्रकट करते इन लेखों को आम जनता गहरी रूचि से पढ़ती थी, लेकिन इन स्थानों को चलाने वाले व्यापारी इन लेखों से बड़े क्रुद्ध हुए। इसलिए मैडेन ने नेल्ली को छुट्टी पर चले जाने की सलाह दी।

इस प्रकार नेल्ली न्यूयॉर्क चली गई, जहाँ बहुत से समाचार पत्रों ने उसे केवल इस कारण नौकरी नहीं दी, क्योंकि वह एक महिला थी। आख़िरकार उसने जोसफ पुलित्ज़र और जॉन कॉकरिल को वर्ल्ड अख़बार में उसे पत्रकार की नौकरी देने के लिए राज़ी कर ही लिया। उसने वादा किया कि वह उन्हें शहर के मानसिक चिकित्सालय ब्लैकवेल आइलैंड पर एक लेख लिख कर देगी।

ब्लैकवेल आइलैंड के बारे में नेल्ली की सनसनीखेज़ कहानी की वजह से इस चिकित्सालय की जाँच शुरू की गई। उसमें सुधार किये गए, और संस्था में बहुत बदलाव आया।

लेकिन नेल्ली के लिए तो यह केवल शुरुआत ही थी। भेष बदल कर उसने धोखेबाज़ रोज़गार एजेंसियों का पर्दाफाश किया। उसने जान बूझ कर अपने को एक चोरी के इलज़ाम में फंसा लिया और गिरफ्तार हो गई। फिर उसने महिला कैदियों के साथ होने वाले अन्यायपूर्ण व्यवहार के बारे में लिखा। बचाव दल की कार्य-कुशलता का परीक्षण करने के लिए वह जान बूझ कर एक नौका से समुद्र में गिर गई। उसने राजनितिक सांठ-गांठ करने वाले कई भ्रष्ट लोगों का भी पर्दाफ़ाश किया। और उसने महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया।

लेकिन फिर भी नेल्ली ब्लाई की असली पहचान किसी को पता नहीं थी। बहुत से लोग यही मानते थे कि नेल्ली ब्लाई पुरुष पत्रकारों के एक समूह का नाम है।

जूल्स वर्न की पुस्तक "अस्सी दिन में दुनिया की सैर" १८८० के दशक में बहुत लोकप्रिय थी। नेल्ली चाहती थी कि वह जूल्स वर्न के काल्पनिक नायक फिलियस फॉग द्वारा स्थापित तेज़ रफ़्तार के इस कीर्तिमान को पराजित करे। पुलित्ज़र को यह विचार अच्छा लगा, लेकिन वह इस काम के लिए किसी पुरुष को भेजना चाहता था। लेकिन जब नेल्ली ने कहा कि फिर वह किसी और अख़बार के लिए यह काम कर दिखाएगी, तो उसे राज़ी होना पड़ा।

वह १४ नवम्बर १८८९ को न्यू जर्सी से रवाना हुई, और ठीक ७२ दिन, ६ घंटे और १० मिनट बाद वापस न्यू जर्सी लौट कर वापस आ गई। उसने पुराने कीर्तिमान को तोड़ दिया था।

१८८५ में नेल्ली का विवाह न्यू यॉर्क के व्यापारी रॉबर्ट सीमैन से हुआ, और तब तक वह लगातार वर्ल्ड अख़बार के लिए लेख लिखती रही। उसके बाद १९१० में सीमैन की मृत्यु तक दोनों शांतिपूर्वक न्यू यॉर्क में रहे।

जब पहला विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ, नेल्ली ऑस्ट्रिया में थी। वह १९१९ में अमेरिका लौट आई, और न्यूयॉर्क जर्नल ने उसे काम पर रख लिया।

तीन वर्ष बाद जब निमोनिया के कारण नेल्ली का देहांत हुआ तो जर्नल ने उसे कुछ ऐसी श्रद्धांजलि दी, जो अवश्य उसे पसंद आती। जर्नल ने लिखा, " ... सभी का मानना है की नेल्ली अमेरिका की सर्वश्रेष्ठ पत्रकार थी।"

समाप्त